देकार्त का द्वैतवाद

मूल तत्व के संबंध में दो प्रकार के प्रश्न उठते हैं- एक तो उसके स्वरूप के संबंध में तथा दूसरा उसकी संख्या से संबंधित| परम तत्व की संख्या संबंधित प्रश्न यह है कि परम तत्व की संख्या एक, या दो या अनेक हैं? जिन्होंने परम तत्व की संख्या एक माना उन्हें हम अद्वैतवादी मानते हैं| वह सिद्धांत जिसमें परम तत्व की संख्या दो माना गया है उसे द्वैतवाद कहा गया है तथा उस सिद्धांत को किसके अनुसार परम तत्व की संख्या अनेक माना गया है उसे अनेकतत्ववाद कहा गया है| परम तत्व की संख्या दो स्वीकार करने के कारण देकार्त का तत्वमीमांसा द्वैतवादी है| देकार्त ने माना की मूल तत्व ना तो सिर्फ जड़ स्वरूप का है और ना ही सिर्फ चेतन का| उसने मूल तत्व के स्वरूप को जड़ तथा चेतन दोनों ही मान लिया| उसने मूल तत्व के स्वरूप में द्वैत को स्वीकार किया| द्वैतवाद मूल तत्व के स्वरूप में द्वैत मानता है अर्थात मूल तत्व जड़ तथा चेतन दोनों के स्वरूप का है| यही कारण है कि विश्व में दो प्रकार के पदार्थ नजर आते हैं- जड़ तथा चेतन| मूल तत्व की प्रकृति में ही द्वैत है| वस्तुतः दार्शनिक क्षेत्र में तत्वमीमांसात्मक दृष्टि से उस प्रकार के सिद्धांत को द्वैतवाद की संज्ञा दी जाती है जो मूल तत्व के स्वरूप तथा संख्या दोनों में द्वैत मानता हो|

देकार्त के दर्शन में जड़ तथा चेतन के बीच एक घोर द्वैत का उदाहरण हमें मिलता है| जड़ तथा चेतन को देकार्त दो विरोधी सापेक्ष द्रव्यों के रूप में लेते हैं जिनमें परस्पर कोई मेल नहीं है और जो निरपेक्ष रूप में परिवर्तित नहीं किया जा सकता| विश्व की जड़ तथा चेतन सत्ता एक दूसरे से स्वतंत्र हैं| जड़ पदार्थ जड़ द्रव्य के विभिन्न रूप है तथा चेतन पदार्थ चेतन के| देकार्त के दर्शन में विश्व की व्याख्या में मौलिक तत्वों के रूप में दो स्वतंत्र तत्व आते हैं- जड़ तथा चेतन| इस प्रकार चित और अचित् इन दोनों तत्वों की सिद्धि होती है| दोनों द्रव्य हैं क्योंकि दोनों की एक दूसरे से स्वतंत्र सता है| दोनों परस्पर निरपेक्ष और विरुद्ध हैं| एक चेतन है, दूसरा जड़| दोनों की पृथक और समान सत्ता है| चित् का मूल गुण है चैतन्य और अचित् का मूल गुण है विस्तार|

देकार्त ने मन तथा शरीर नामक दो सत्ताओ का समावेश माना | उसने एक ही मानव अस्तित्व में दो जगत की कल्पना किया| इन दोनों के मौलिक स्वरूप के अंतर को उसने भिन्न-भिन्न ने बतलाया| शरीर को उसने भौतिक स्वरूप का स्वीकार करते हुए उसके यात्रिक स्वरूप को स्वीकार किया, जबकि मन के स्वरूप को उसने आध्यात्मिक माना| शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार की क्रियाएं मानव अस्तित्व में संपन्न होती हैं| शारीरिक तथा मानसिक क्रियाएं परस्पर संबंधित हैं- शारीरिक क्रियाएं मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करती हैं तथा मानसिक क्रियाएं शारीरिक क्रियाओं को|

चित् और अचित् को परस्पर स्वतंत्र और विलक्षण मानने के कारण देकार्त को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है| यदि चित् और अचित् परस्पर भिन्न और स्वतंत्र हैं, तो उनका संयोग कैसे हो सकता है? देह का प्रभाव चैतन्य पर और चैतन्य का प्रभाव देह पर कैसे पड़ता है? शरीर पर आघात पहुंचने से चैतन्य प्रभावित होता है और चैतन्य की चिंता ग्रस्त होने से शरीर दुर्बल हो जाता है| प्रश्न उठता है कि दोनों के बीच यह संबंध कैसे संभव होता है? दोनों किस तरीके से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं? देकार्त के मत में मन तथा शरीर का द्वैत है| दोनों में एक दूसरे के विरोधी तत्व मौजूद हैं, मन तथा शरीर के बीच संबंध विषयक प्रश्न अत्यंत गंभीर रूप धारण कर लेता है| आखिर ऐसे दो विरोधी तत्व परस्पर संबंधित किस प्रकार होते हैं, दोनों को एक दूसरे को प्रभावित करने की कौन सी विधि है?

देकार्त इस समस्या के समाधान हेतु चिदचित संयोगवाद अर्थात चित् और अचित् में परस्पर क्रिया प्रतिक्रिया का संबंध माना है| एक की क्रिया से दूसरे में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है| देकार्त की एक और कल्पना है कि शरीर की एक विशेष ग्रंथि पीनियल ग्लैंड इन दोनों मन और शरीर की मिलनसैया है| पीनियल ग्रंथि नामक एक ग्रंथि को मस्तिष्क के किसी एक केंद्र में अवस्थित माना है जिसके अंदर उनके अनुसार मन का निवास है| जब कोई शारीरिक क्रिया होती है तो वह स्नाचविक प्रवाहो द्वारा पीनियल ग्लैंड में पहुंचती हैं जहां मन अवस्थित अवस्थित होता है, फलता उसमें क्रिया उत्पन्न हो जाती है| उसी प्रकार मन के क्रियाशील होने पर फिर पीनियल ग्लैंड के माध्यम से उसका असर मस्तिष्क में तथा स्नायुमंडल मीत पड़ता है, फलत: शरीर क्रियाशील हो जाता है| इस प्रकार देकार्त एक स्थूल तथा ठोस रूप में शरीर तथा मन की क्रिया- प्रतिक्रिया का विवरण प्रस्तुत करते हैं| उनके अनुसार मन एक अमूर्त सत्ता है जो जड़ तत्व की तरह निश्चित स्थान पर अवस्थित होकर कोई स्थान नहीं घरता है|

जड़ जगत एक उद्देश्यहीन यंत्र है जिसे ईश्वर रूपी चेतन चालक चला रहा है| जड़ में चैतन्य नहीं और चित में परिमाण या विस्तार या आकार नहीं|